हर हर राङ्कर जय जय राङ्कर



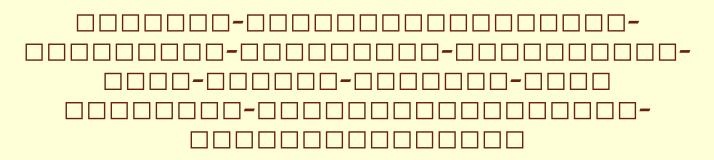












मभ्उभिद्विग-म्वी-पागवलभा

Announcement regarding parayanam to be done on days of Amritasiddhi Yoga as directed by Jagadguru Shri Kanchi Kamakoti Peetadhipati Shri Shankara Vijayendra Sarasvati Shankaracharya Swamigal

Time is the basis of all actions. As is well known, actions executed at the proper time bear more fruit.

In the cyclic rotation of time, along with the bad combinations of grahas and nakshatras that indicate the probability of upcoming difficulties, good combinations that grant benefits in multiples also arise. The sages who know this subtle nature of time have done us immeasurable anugraham by telling us about this via shastram. They have shown the way to protect ourselves for times when difficulties may arise, and to attain happiness by making efforts to do good deeds in beneficial times.

Among such good combinations are the Amrita Siddhi yogas of certain weekdays and nakshatras. They are Sunday-Hasta, Monday-Mrigashirsha,

हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर

Tuesday-Ashvini, Wednesday-Anuradha, Thursday-Pushya, Friday-Revati, Saturday-Rohini.

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा श्रानिरोहिणी च। सोमे च सौम्यं भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगाः॥

As per the reading सामश्रवण्याम् in the same verse, Monday-Shravana is also praised as a special yoga. Good deeds performed on such yogas become especially strong in protecting and nourishing us.

For instance, in Devi Atharvashirsha, it is said भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जस्वा महामृत्युं तरित, that is, one can cross even a gruesome death by doing parayanam when Tuesday and Ashvini join.

Therefore on these potent days, Shri Acharya Swamigal instructs to perform the following Devi-related parayanas as per achara and tradition and achieve both loka kshemam and one's own kshemam.

- o Do parayana of all texts given below as far as possible.
- o If unable to do on a single day, it may be done by starting or finishing on the day with Amrita Siddhi yoga.
- This is to be done after completing snanam, sandhyavandanam and other nitya karmanushthanam.

Texts for parayanam

- 1. Durga Saptashati
- 2. Lalita Sahasranamam
- 3. Saundarya Lahari
- 4. Durga Stuti from Virata Parva of Mahabharata (see appendix)
- 5. Durga Chandrakala Stuti of Appayya Dikshitar (see appendix)
- 6. Durga Stuti from Bhishma Parva of Mahabharata (see appendix)
- 7. Durga Pancharatnam, composed by Shri Chandrashekharendra Sarasvati

Shankaracharya Swamigal, 68th Acharya of our Shri Kanchi Kamakoti Moolamnaya Sarvajna Peetam (see appendix)

- 8. Mahishasura Mardini Stotram
- 9. Abhirami Anthathi (Tamil)

Naivedyam: Dadhi-annam (curd rice)

Please do the parayanam with sankalpam as given below and receive the Grace of Guru and Devi.

॥भद्गला

भभेपा ३ + पी ३ फ्रं हग व ट्टाः एग ए भा र न -

- ० उरानीं लेक भत्र प्म्उम् भार्भिक-रेग-विमिधम् निम्निधभा उन्नल नार्भा,
- ० एन नं म्विया निवृद्धि- भवक- भिया ग-मिर्वि मूर्रं,
- ० भाग्रनं णिक्किकारं गर्षे य चैद-विम्वाम-पृष्टि-मिष्कुर्भा, मणिक्कि-मङ्गीनं विनामार्स,
- o उद्मा-म्वाग भवले क-बिभा ग्रं
- राग्डीयानं भलास्तानं विभ्-निवृद्धि-पृत्रक-मङ्काद्य-प्वृद्धि-म्वग गिलिक-मृभृभिकमृद्ग्य-प्गृपुर्भा, ममङ्काद्धिकः निवृद्धे
- ० रागडीयानं भनुः भनाउन-भभ्राय म्स-रुट्टेः मरित् मूर्
- भत्रिपं मित्रपं ग्रियम् गर्ने मान्या मान्या गर्मा मान्या माया मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या माय
- मभ्क मरु-मुक्त्वा एक्-मुक्त विवेक-वैग्ग्य-मिम्नुतं

म् जामपुमडी-ल लि डामरूम् नाम-भे नृद्धल रुगी-विगए पत्रम् जामुडि-म् जा छ न् कला मुडि-भर्ति भागमा भिन्न नी भें इ-म कि राभु नु मि भें इ-पा रायलं कि रिष्ट्रे।



नैणि-मंबद्भर-मभ्उ-मिम्नि-चेग-मिनानि

2024-04-21	Sun	1 पः 8	मुम्द्रिङ्गु-चैगः 17:06 ▶
2024-05-07	Tue	1 पः 24	रुभाम्निनी-चेगः ►15:31
2024-05-19	Sun	त् धरः ६	मुम्रिटुरुभु-वेगः
2024-06-16	Sun	भिष्रभा 2	मुम्द्रिङ्गु-वेगः ▶11:11
2024-06-19	Wed	भिष्रभा 5	इण न्राण-चेगः 17:21 ▶
2024-06-24	Mon	भिष्रभा 10	मेभम् वल्री-चेगः 15:52 ▶
2024-07-17	Wed	ቆ ጀሮ፡ 2	इण न्राण-वेगः
2024-07-22	Mon	ቆ ቴሮ፡ 7	भेभम्प्रली-चेगः
2024-07-26	Fri	ቆ ቴሮ፡ 11	रुगु√वडी-चेगः 14:28 ►
2024-08-14	Wed	ቀ ጀር፡ 30	इण न्राण-वेगः ►12:10
2024-08-19	Mon	भिंफः 3	मेभम्प्रली-घेगः ▶08:08
2024-08-23	Fri	भिंफः 7	रुग् ∓ वडी-घेगः
2024-10-21	Mon	उुला 5	मेभभ्गमी मु-चेगः 06:48 ▶
2024-10-24	Thu	उुला 8	गुरुप्धृ-घेगः 06:13 ▶
2024-11-18	Mon	वृद्धिकः 3	मेभभ्गमी मु-घेगः ►15:46
2024-11-21	Thu	वृद्धिकः 6	गुरुप्धृ-घेगः ►15:33
2024-12-14	Sat	व् ग्लिकः 29	मिनिर्गेष्ठिल्पी-घेगः
2025-01-07	Tue	णनुः 23	रुभाम्निनी-वेगः 17:48 ▶
2025-01-11	Sat	णनुः 27	मिनिरेिंफि "ी-वेगः ►12:27
2025-01-19	Sun	भ क गः 6	मुम्द्रिकमु-चेगः 17:28 ▶
2025-02-04	Tue	भक्रः 22	र्छेभाम्निनी-वेगः
2025-02-16	Sun	नुभ 4	मुम्रिटुरुमु-वेगः
2025-03-16	Sun	भीनः 2	मुम्दिटुरुमु-वेगः ►11:44

॥म्जाभुउिः॥

वैमभुवन उक्प

विराएनगरं रभुं गम्बभाने वृणिष्ठिरः। यभुवन्ननभा मितीं म्नां दिशुवनिम्नरीभा॥॥॥

यमेरागर्भभुउं नागयणवरिषयभा। नन्गेपकुल एउं भङ्गलुं कुलवचनीभा॥॥॥

कंभविम् वर्णकरीभभ्रण्णे ब्यद्वरीभा। मिलाउएविनिबिशुभाकामं प्रिगाभिनीभा॥॥

वाभ्रवम् रुगिनीं मितृभानृतिरुधिराभा। मितृभ्राणगं मितीं पितृपिएकणारिणीभा॥॥

रुगवडरल प्रेंट व भूगति मम् मिवाभी। उत्तर् वे उपयम पापाद्य गामिव म्यालाभी॥॥

भेंदुं प्राक्त इवे विविष्टः भेंद्रमभुवैः। मुभनु म्मन काङ्मी राष्ट्र मैंवीं मकानुष्टः॥॥॥

नभे भु वर में तृष्ट्र तुभावि वृद्ध गाविणा। गला द्वभम् माका विष्य मुनिका न ने॥॥

गरुगुर गरुवक् पीनम्लिपवेणः।
भवरिपम्चवलवे केव्राक्षरणितिल्याः॥
राभि स्वि वषा पम्म नागवल्यपिग्रः॥
भुगुपं कृष्णदं ग विमसं उव पिग्रिगाः॥॥

त्रभूम्विमभा त्रभू मङ्गद्वण्यभावना। विरुटी विप्ले ग्रज मत्त्रभूमभुद्ये॥००॥

भारी म भद्गा भक्षी भी विमुद्धा म या कुवि। भामं पन्मुकामम् विविषानुष्युणनि मा००॥

मुद्भला हुं भुम्राहुं कम्म हुं य विद्धिया। यन्विभ्वतिना स्वि भूपिन द्वं विरास्पे॥०३॥ भ्तुएन विग्निड्ग कैमग्रीन मेरिना।
इस्क्षेत्रगमन मेरिप्भुड्ग गस्डा०३॥
विरुप्प गग्गिस्त रेगनिवेक भन्नाः।
प्रस्त मिगिपिम्सानाभिस्त्रिन विगप्पमे॥०६॥
कैभागं व्डभाभाव दिस्मिं पाविउं द्वया।
उन द्वं भुवमे स्वि दिस्मिः प्रस्मिति ग्रा०५॥

र्ने कृरक्ष्रिय भिष्याम् नामिन। प्भाना मे भ्रम् हे म्यां कुरु मिया रुवा रुवा

एया क्वं विएया क्वित मङ्ग्म क्र एयप्रा भभाषि विएयं है कि वरस क्वं क्र भाभ्यम्॥०॥

विष्टु क्येव नगम् हु उव भूनं कि मम् इआ। कालि कालि भकाकालि मी एमं भपमु प्रिचे॥ ० ऽ॥

त्रुर्वे वर्षः काभग्रापित्ति। कारावरुर्वे व ग्रं मंभूपिधृति भानवाः॥००॥

प्णभिति ग्र व द्वां ि प्राउँ उ नग रुवि। न उपा म्यारं कि सिन्धु इँउ एनंडेऽपि वा॥३•॥

द्वा अप द्वा उउ के द्वा भूष एक। का नुप्रिक्ष विश्वस्ता के भूषा में प्र भूष्टा रूवे। द्वा कि के स्वा के प्रकार के प्

र्लप्डरल किंव का गुरिश्वीष् का।

य मूरि भिर्मे मिन्नि मिन

न्लंश्य वज्जनं भेकं प्रनामं एनब्यभा। वृष्टिं भ्टुं रुवं क्ये प्राप्तरा नामविधृमि॥३म॥ भें फं राष्ट्रिति ह्सः मरां द्वां प्पव्यान्।
प् उम्र वषा भूषा उत दित भ्रेम्विति॥३५॥
इक्ति भंगपम् पड्रिति मृद्धे हु हु हु देश्वे नः।
मरांग हु के मे दिन्न मर्ग्य हु हु हु देश्वे नः॥
एवं भुडा कि भा दिती दिन्याभाभ पापः वभा।
उपग्रे उ राष्ट्रिसे व्यान्भवृतीडां॥३॥

मृबुब ग

म्य गण्न ज्य के भरी वं वर्ण नं प्रें।
कि विष्ट्रिय गर्मे व सम्मे विष्ट्रिय गर्मे व्याप्त १३०॥
भभ प्मारा निष्ट्रित क्या के ग्रविय कि नी भा।
गण्ड निष्ठ स्था के क्या के कृम मिर्मि पृष्ठ ला भा।
क्या कि प्राप्त के क्या के कृम मिर्मि पृष्ठ ला भा।
भव्भारा स्व वे भी पृभा गे गृं य कि विष्ठ १३॥३०॥
व य मक्षी ग्रविष्ट ति के विष्ठ के व्याप्त के ले भा।
उभा उसा प्राप्त का विष्ठ विष्ठ १३०॥॥॥॥
प्राम नगर्ग वा प्राप्त भम्मे मद्भक्ष ए।

मए तुं म् जिंका गुर्गे भागा गिर्ने गिरी॥३३॥

च भूति भृति भंगाराना चमा कं ठवडा भूडा।

न उभंगम् ज कि सिम्मिना लेक ठिव भृति॥३३॥

- - - -

इम् भवाणि काराणि मिम्नि वामृति पापः वा॥

भर्भामास्य वः भवाविगएनगरि भिद्धान्। न प्रमृति कुरवे नरा वा उन्विग्मिनः॥३५॥ उट्टकु वरमास्वी यणि श्रिरभरिन्भभा।

रकं क्ष्म ग्राप्य प्रत्यं उर्देव रागीय उ॥ ३०॥ ॥ ७८३ मी भन्न का राउँ विराण पात्य प्रत्य प्रत्य प्रवास सम्भेरण यः॥

॥म्जागन् कला भु उः॥

विषेठ्यीम्वरभुटं विरुष्टी विद्वुष्ठुण्यः। जरभुल्यम्भी वन् जुर्गी विद्वणविद्विषाभी॥०॥

महुरू नेन भरभी रूपभु तमृ हुके मिडा रुग वम्बि पिण नलीला भी। विम्नम् री विपम्पाकर ल्प पुरमा डा भाडा भभामु भएक एक वेदिक वृी॥॥॥

प्पिस्पित्वे निकिउँ तिस्मितिलाँ मैं।

ारकी रुविस्ति कि उद्यापन निकर्णे हैं।

मिभूतमभू निकर्ण प्र उद्याय पर्में।

भारत भभामु भिक्षा तक वी प्रमुखा ॥ ॥

प्लियमैलउनयाउनका निमभ्रा-केमे रिडा कुवल यस्त्रविया करिंका। नारायणी नभर्राभिडकल्वली म्पीडिभावकर् मुभ्राम्भकर्गु॥म्॥

विम्मिन्नगिडि भिष्णिम नकगीडि वभूः न गण्या गुरिष ग्रामा भिराद्विष्ठा नि। भुकृति पद्गण्यकु गण्या भुगिति किम्न म् भूगि पावकभृष्यम् मिकं रुष्ण उप्भाषा।

उद्गृष्टिहरूननभुवनः द्वकानि भंगक्षकाष्ट्रापिलकुउक्तिउच्च चमृः। भुकुत्रम्पिनिगभात्रुविद्यः ५०नि उं विम्वभाउगभएः म्भिकिभ्रुवीभि॥॥॥

य वैप्रिष्ठप्तरित्रम्भभृष्टिः

दित्रभेरमभयन य कारिडाम्।

मिविषुडाम्रिष्णमातिषु गुपरुमाः

उरिम्वा मभिक्राबर् भं विपम्हं॥॥

भुकं वसीवभरविन् हवासिस् स्भा म्वतृ स्वनुपसं भ्रमः भभाषिः। म्वतपुरापदुर हीस्भन नृल हुं उपासिस्विड हलीं प्लभाभि भृतुर॥ इ॥

भाकिभ्रीउन्हवं प्र हुई प्र क्रुभ् मृतिभ्रुद्धिस्माम्बद्धार्द्धः । मक्षामान्द्रन्तान्द्रकेरिमहुः मक्षाममा मभिक्षात्रद्धाः विपम्हः॥॥॥

एउम्चिरिइभीपलं लिपिउं ि वभुः भभुष्टिउं भम्न एव निवेमिउं वा। म्नं ग्र उग्विड म्भुगभपृमेषं म्वः प्वमूडि ग्र भवभुभं रुष्ट उभा॥०॥

यदु एत पुंडित भम् डिकिइ वित्र पीडाः पिडा भक्त मेमक्रा पृथिऽपि। उपाभिप सुक गुल्या म्डी व पृषि डाभी सुत्रम् उठल्या मालं प्यम्॥००॥

का गुरा भष्टम् म्हल युउया उवभवाः भयाम् वाशिष्टले शिप्रिम् ग्रमः। यभाः प्पम् ग्राग्ले विपम्भागिः भा मे मम्हाभ् क्रिम् भवस्गक्ष विदी॥०३॥

बद्घ वर्ष भन्नाड भ्रुड्य प्मक्त विद्वव्य ग्र विविध् ग्र भन्नेपडापे। यद्य एप्ट्राप्ट्रिका भाकाः भाम भभम्राप्ट्राची मदणं ठवानी॥०३॥

गल्लम्यप्रिउपत्रगात्रभेकः
उम्मक्रम्य प्रचेगः।
प्रमृभित्र प्रभलकृउ वस्माप्त उ
मा मे मिवा मकलभपृमुकं किल्लेडु॥०म॥

पापः प्लमुउनयः प्नक्तिः भाभा यम्पि ज्युभयभागः उद्गीउभा। यद्भवनेन ह्यभिन्गियाः वप्रदं उभाम्मित्वदुक्तीं म्याः गंदैः भि॥०५॥

यहा गुनसं भाषभवापृभननुपृष्टैः भाषात्री उभद्भृउपित्रग्रुभान्नवापः। गोपाङ्गनाः किल यह्यानपृष्टभाद्यः भामि महा उगवडी उवडु प्मनाण्या

गाउँ प्पानु छाउँ भव् विमः प्पान्ता उन्नेष्ठ भ्रुविष्मनृद्धलेः प्लेष्ठ्। वृद्ध ग्र उन्निभाषडं प्उनं नवनीभा मकामभामिसनीं सगडं रुस उन्ना।०॥

द्भकालि प्रस्थि प्रणाप्त कला भुडिः। महुवैरन्भ ज्ञेषा भवा पिष्ठिनित इचे॥०००॥ ॥४८ मीभ द्भविष्ठेन् विराणि उप्ताणा प्रमुकला भुडिः मभुत्रण॥



$\| \mathbf{L}_{1} \mathbf{T}^{-1} \mathbf{L}_{2} \mathbf{T}^{-1} \mathbf{L}_{3} \mathbf{L}_{1} \|$

उ पृप्त-वेगानगडा म्यम्ना द्वामेव मितीं भ्रगुलिनिगुम्हाभा। द्वमेव मित्रः यगमिश्वगम् भा याकि मित्रम्विमित्रमाद्वि॥०॥

रिवाञ्चमितः म्डि-वाकृ-गीडा भन्निः नेकमृ प्रः प्मज्ञा गुन्न परं वृभ भडः प्डिष्ठा भंगपन्नि भज्जम्बिक्यादि॥॥ पराजम् मितिविविचैव म्यम म्रियम्-वाक्तेम्डि-म्वि म्जा भाराविकी स्वानलिक्षा उ भाराविकी स्वानलिक्षा उ भाराविकी स्वानलिक्षा उ

रिवाक्ममब्रिन मिवाक्मकुडा यडा कुक्मवायव्यविद्याः द्वं पाम-विद्यस्य-करी प्मिस्न भंग पालि भविष्यिः भेक्साद्यामा

त्रं रक्-प्रः विविण भग्री
रक्-प्रिष्ठाःमृपिः स्-गीउः ।
इत-सुरुपः द्वउयाः गिपलानां
भाषात्र भवस्य भेवसाद्याना

॥ ७डि मी-का फ्ली-का भके एि-भूला भाषा-भत्र स्नापर त्र्मापर त्रमापर त्

॥मक्त्- ७३-८ जा-भुडिः॥

भक्क्ष्य उक्र ग

ण रुग क्ष्य ने म्हूर युम्र य मभ्पिम् उभी। मच्चनम् लिङ ग्रंय क्ष्रे व्यानभर्वी द्याण

म्रिगवानुबाय

मृग्नियुद्धाः भकागाके भक्त्याकिभृषि भिद्धः। प्रसार्थाय मञ्जूषं प्रजामित्रभृष्टी स्थाः॥॥

भक्क्ष्य उब ग्र

ारवभ्कें उत्तर महु वाभ्राहेव पीभडा। यवडीट राषाञ्चा पुः भेड्भाफ क्रुडा क्कृलिः॥॥

मक्त उक्य

नभमु भिम्नमिनानि मुद्ध भन् रवाभिनि। कुभारिकालिकापालिकपिलिकुमूपिङ्गले॥म॥

ठम्कालि नभपुष्टं भकाकालि नभेष्यु उ। यिद्र यद्दर नभपुष्टं उपिण्य वरविक्रिनि॥॥

का ट्रायनि भका राण करालि विष्यय एय। मिगिपिपस्किप्र एप नाना राण रुधिउँ॥ ॥

मह्मुलप्रात्य एक्वापएकणितित्य। गेपन्भुगन्य एष्ट्रिन्न्गेपक्तेम्ब्व॥॥

भिष्णमित्व निर्टं के मिकि पीउवाभिनि। मह्याम के कभाष नभमुज्यु गणपि्च॥ऽ॥

उमे माकभ्रि मुँउ मुप्लू कैएरुनामिनि। किरुथि विरुपानि मुग्रमानि नमें भु उ॥७॥

वैम्म्डि भक्षपृष्ट वृद्धष्ट एउवैम्मि। एभुकएकग्रैहिषु निटुं मिन्निक्टल वै॥००॥

र्द्वे वृद्धविम्ट विम्ट नं भकानिम् ग्र मिकिनाभा। भून्भाउरुगविऽ म्च कानुगविभिनि॥००॥

भ्राष्ट्रा का भ्राप्त है । भ्राप्त के स्वाप्त का भ्राप्त भ्राप्त है । भ्राप्त है ।

मुउरऽभि द्वं भक्रः स्वि विमुद्धित तुराद्धता। एवे ठवउ में निटं द्वस्भासाम्लिस्रि॥०३॥

का गुरारुयम् जिप् रुगुःनां ग्रालयेष् ग्रा निटुं वभि पाउन्ले युम्भ स्विभि स्विनवान्॥०म॥

र्दे एभ्री भेलिनी प्रभावा कीः मीभृषेत प्र। महुर प्रावडी प्रेत माविदी एननी उषा॥०५॥ उधिः पश्चित्तित्रीिश्चित्त्वितितिती। कुडिसुडिभटं मह्नु वीकृमे भिम्न्यार्ग्णः॥०॥ भक्क्ष्य उक्य

उउः पार्म् विस्व रुक्तिं भानववद्मला। मनुविकगउवारा गैविन्भाग्उः भि्रा०॥

मृबुब ग

भूल नैव उकालेन मइक्किपृपि पापः वा नरमुभि म्चि नारायणभाषायवान ॥०००॥

मस्यमुं गल्प्रील्प्भिप वस्रुः भ्रयभा। उट्टेवभूकः वरमः बल्प्न उरणीयडा००॥

लक्षा वरं उ के नुवे मन विष्यभाद्भनः। मुक्रीक उउः पाद्भि र मं परभमभूउभा॥३•॥

त्रभ्रास्तावकाषी मिट्टी मही प्राप्तुः। य उम्रे प०उँ भुँउं कलु उङ्गय भानवः॥३०॥

यबरबः पिमा ग्रिष्टे न ठयं विमृडे भमा। न ग्रापि रिपवमुकुः भसमा च ग्रामे स्णिः॥३३॥

न रुवं विमृड उमृ ममः गण्कलामि। विवाम एवभाभेडि वस्ने भृमृडि वस्नाडा॥३३॥

म्नं उरि प्रावमं उपा प्रेरिविभ्पृरः। भम्मे विष्यिति हं लक्षीं प्रेषेटि केवला भा॥उमा

म्रोगृवलभभ्ते स्तिब्ध्यम् उषा। एउम् सं प्भाराषु भया वृष्मम् णीभउः॥उभा

यइ एम् म्हिः का निस् इ स्तिः मीभुषा भिः। यँडे एम्भुः क्ष्मे यडः क्ष्मुभुँडे स्याः॥३०॥ ॥ ॐडि मीभम् का राउँ रीभू पत्रास्मिम् गवम्नीडा पत्रास्मि इंवेविंमेऽपृष्यः॥ हर हर राङ्कर जय जय राङ्कर



काचेन वाग्रा भनमिति, चैंवा वृद्धा प्राज्यान वा प्राः भ्रष्टा वाडा। करीभि चद्धा मकलं परमी नारावण्णचेंडि मभरावाभि॥

